

CERTIFICATE NO : **ICRESTMH /2024/C0824860**

दृश्य संचार के माध्यम से गोंड चित्रों के विकास का अध्ययन

Shailja SullereResearch Scholar, Department of Journalism and Mass Communication,
Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

गोंड चित्रकला भारत की आदिवासी परंपराओं में सबसे महत्वपूर्ण और प्राचीन दृश्य संचार माध्यमों में से एक है, जिसने न केवल गोंड समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया है बल्कि आधुनिक समाज को भी आदिवासी जीवन दर्शन, प्रकृति के प्रति उनकी आस्था और जीवन जीने की शैली से परिचित कराया है। दृश्य संचार का अर्थ केवल शब्दों और भाषा से संवाद करना नहीं है, बल्कि चित्रों, प्रतीकों, रंगों और आकृतियों के माध्यम से भी संदेशों का आदान-प्रदान करना है। गोंड चित्रकला इसी दृष्टि से एक अद्वितीय कला है, जिसने पीढ़ी दर पीढ़ी कहानियों, लोककथाओं, धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक संदेशों को दृश्य रूप में प्रस्तुत कर सांस्कृतिक संवाद को जीवंत बनाए रखा है। गोंड समुदाय की यह कला मूलतः मौखिक परंपरा से जुड़ी थी, जहां लोकगीतों और कथाओं को चित्रों के माध्यम से दीवारों, फर्श और घरों की दीवारों पर उकेरा जाता था। यह चित्रकला न केवल सजावट का साधन थी बल्कि जीवन के विविध अनुभवों और विश्वासों को व्यक्त करने का माध्यम भी थी। इसमें प्रकृति और जीव-जंतुओं का गहरा संबंध दिखाई देता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गोंड समाज अपने आस-पास के वातावरण से संवाद करता था और उस संवाद को चित्रों के रूप में संरक्षित करता था।

मुख्यशब्द- दृश्य संचार, गोंड चित्रों का विकास, सांस्कृतिक धरोहर, आधुनिक समाज, आदिवासी जीवन दर्शन, धार्मिक मान्यता, सामाजिक संदेश, सांस्कृतिक संवाद

प्रस्तावना

गोंड चित्रों का विकास दृश्य संचार की दृष्टि से कई चरणों में देखा जा सकता है। प्रारंभिक दौर में यह चित्रकला धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों तक सीमित थी। विवाह, उत्सव, फसल कटाई, जन्म, मृत्यु और पूजा-पाठ के अवसरों पर घरों की दीवारों और आंगन को चित्रित किया जाता था। इन चित्रों में देवताओं, पूर्वजों, पशु-पक्षियों और प्रकृति के तत्वों को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता था। यह दृश्य संचार समुदाय के भीतर धार्मिक



आस्था और सामाजिक एकता को प्रकट करता था। उदाहरण के लिए, गोंड चित्रों में 'धर्ती माता', 'वन देवता', 'पशु संरक्षक देवता' आदि की आकृतियों को बनाकर समाज को संदेश दिया जाता था कि प्रकृति और जीव-जंतु उनके जीवन का आधार हैं और उनका संरक्षण करना आवश्यक है। इस प्रकार गोंड चित्रकला केवल कला न होकर संदेशवाहक की भूमिका निभाती थी, जिससे लोग बिना भाषा के भी गहरे विचारों और मान्यताओं को समझते थे।

समय के साथ गोंड चित्रकला ने एक व्यवस्थित शैली और तकनीक का रूप लिया। इसमें रेखाओं, बिंदुओं और ज्यामितीय आकृतियों का विशेष महत्व है। यह दृश्य संचार का एक अनूठा तरीका था क्योंकि हर रेखा और बिंदु अपने भीतर एक विशेष अर्थ समेटे होती थी। उदाहरणस्वरूप, पेड़ों की शाखाओं को विस्तृत रूप में चित्रित करना जीवन की निरंतरता और वृद्धि का प्रतीक था, वहीं जानवरों की आकृतियों को बनाकर यह संदेश दिया जाता था कि सभी जीव-जंतु एक दूसरे पर निर्भर हैं। गोंड चित्रों में रंगों का प्रयोग भी प्रतीकात्मक था। लाल रंग जीवन और ऊर्जा का, हरा रंग प्रकृति और शांति का, पीला रंग धार्मिकता और दिव्यता का, जबकि काला रंग रहस्यमय शक्तियों और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता था। इन रंगों और आकृतियों के माध्यम से गोंड समाज अपने विचारों, विश्वासों और संदेशों को सरल और प्रभावी तरीके से संप्रेषित करता था। यही दृश्य संचार की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह भाषा की बाधाओं को पार कर सीधा हृदय और मस्तिष्क तक पहुंचता है।

आधुनिक काल में जब गोंड चित्रकला पारंपरिक सीमाओं से बाहर आई और कैनवास, कागज तथा बाजार से जुड़ी, तब इसका दृश्य संचार और भी विस्तृत हो गया। अब गोंड चित्र केवल धार्मिक या सामाजिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर संवाद का माध्यम बनना शुरू किया। कलाकारों ने गोंड चित्रों में आधुनिक जीवन की समस्याओं, पर्यावरण संकट, शहरीकरण और मानवीय संबंधों जैसे विषयों को भी शामिल किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि दृश्य संचार की शक्ति केवल अतीत को संरक्षित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वर्तमान को व्यक्त करने और भविष्य को दिशा देने में भी सक्षम है। गोंड चित्रों में आज भी पेड़, नदी, चिड़िया, हिरण, मछली, बाघ जैसी आकृतियाँ दिखाई देती हैं, लेकिन इनके माध्यम से कलाकार पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और मानवीय जिम्मेदारियों का संदेश देते हैं। यह दृश्य संचार वैश्विक दर्शकों को भी प्रभावित करता है क्योंकि प्रतीकात्मक भाषा हर किसी के लिए समझने योग्य होती है।

गोंड चित्रकला का विकास दृश्य संचार के क्षेत्र में इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने शिक्षा और जागरूकता का कार्य भी किया। गोंड समाज में जहां लिखित भाषा का अभाव था, वहां चित्रकला ने शिक्षा और ज्ञान का



माध्यम बनकर कार्य किया। बच्चे जब दीवारों पर बने चित्रों को देखते थे तो वे उनसे जीवन मूल्यों, प्रकृति के महत्व और सामाजिक नियमों को सीखते थे। यह चित्रकला अनौपचारिक शिक्षा का साधन थी, जो बिना पुस्तक और लेखन के ज्ञान का संचार करती थी। यहां तक कि आज भी गोंड कलाकारों के बनाए चित्र जब शहरों और प्रदर्शनी में प्रदर्शित होते हैं, तो लोग न केवल उनकी सुंदरता का आनंद लेते हैं बल्कि उनके भीतर छिपे संदेशों को भी समझते हैं। इस तरह गोंड चित्रकला का दृश्य संचार व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर ज्ञान और जागरूकता फैलाने का कार्य करता है।

आर्थिक दृष्टि से भी गोंड चित्रों का दृश्य संचार अत्यंत प्रभावशाली रहा है। पहले यह केवल समुदाय के भीतर संवाद का साधन था, लेकिन अब यह कला वैश्विक बाजार में पहचान बना चुकी है। गोंड कलाकारों ने अपनी परंपरा को आधुनिक माध्यमों के साथ जोड़कर उसे एक व्यावसायिक रूप दिया। उनके बनाए चित्र न केवल दीवारों और कैनवास पर बल्कि कपड़ों, किताबों, घरेलू वस्तुओं और डिजिटल माध्यमों पर भी दिखने लगे। इससे न केवल कलाकारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई बल्कि गोंड समुदाय को भी अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली। यहां दृश्य संचार का प्रभाव यह है कि चित्रों के माध्यम से कला और संस्कृति की जानकारी दुनिया के कोने-कोने तक पहुंच रही है और लोग गोंड समाज की परंपराओं से परिचित हो रहे हैं।

सामाजिक दृष्टि से गोंड चित्रों का विकास भी दृश्य संचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। इन चित्रों ने गोंड समाज में एकता, सहयोग और पहचान की भावना को मजबूत किया। चित्रों के माध्यम से लोग अपने पूर्वजों, देवताओं और परंपराओं से जुड़े रहते थे। यह संवाद न केवल धार्मिक आस्था को प्रकट करता था बल्कि समाज को एक साझा सांस्कृतिक पहचान भी देता था। आधुनिक समय में जब गोंड चित्रकला का प्रसार हुआ तो इसने आदिवासी समाज को सामाजिक सम्मान दिलाने में भी मदद की। अब गोंड चित्रों को केवल 'ग्रामीण कला' नहीं बल्कि 'विश्व कला' के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

गोंड चित्रों के विकास की निरंतरता और महत्व

गोंड चित्रकला केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि गोंड समुदाय के जीवन दर्शन, धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक संबंधों का सजीव दस्तावेज है। गोंड चित्रों का विकास मौखिक परंपरा और दृश्य संचार से आरंभ होकर आज वैश्विक पहचान तक पहुँच चुका है। गोंड कलाकारों ने अपनी परंपरागत शैली को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित किया और उसमें समय की माँग के अनुसार परिवर्तन भी किया, यही कारण है



कि इस कला की निरंतरता बनी रही। प्रारंभिक काल में गोंड चित्रकला का प्रयोग घरों की दीवारों, आँगन और मिट्टी की झोपड़ियों को सजाने में किया जाता था। यह केवल सजावट का माध्यम नहीं था, बल्कि एक सामाजिक और धार्मिक संदेशवाहक भी थी। विवाह, त्योहार, फसल उत्सव या अन्य अनुष्ठानों पर बनाई गई आकृतियाँ गोंड समाज की एकता, धार्मिक आस्था और प्रकृति से उनके गहरे संबंध को प्रकट करती थीं। यही परंपरा समय के साथ एक सुव्यवस्थित शैली में बदलती गई और गोंड चित्रकला ने दृश्य संचार का एक मजबूत आधार प्राप्त किया।

गोंड चित्रों की निरंतरता का सबसे बड़ा कारण इसकी गहरी जड़ें प्रकृति और जीवन के अनुभवों से जुड़ी होना है। गोंड समाज ने हमेशा पेड़, नदियाँ, पशु-पक्षी और पर्यावरण को जीवन का आधार माना है। यही कारण है कि उनके चित्रों में वृक्ष जीवन का प्रतीक बने, मछलियाँ समृद्धि का संकेत बनीं, हिरण, चिड़िया और बाघ जैसे जीव शक्ति, स्वतंत्रता और सुरक्षा के प्रतीक के रूप में उभरे। इन चित्रों के माध्यम से गोंड कलाकारों ने आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश दिया कि मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति से गहरे जुड़ा हुआ है और उसका संरक्षण अनिवार्य है। इस प्रकार गोंड चित्रकला ने दृश्य संचार के माध्यम से न केवल समाज को शिक्षित किया बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और जीवन मूल्यों की निरंतरता को भी बनाए रखा।

आधुनिक समय में गोंड चित्रों के महत्व और निरंतरता का दूसरा पहलू यह है कि यह कला अब ग्रामीण और आदिवासी सीमाओं से निकलकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक पहुँच चुकी है। गोंड कलाकारों ने अपनी परंपरागत शैली को कैनवास, कागज और आधुनिक रंगों के माध्यम से नए रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया। इस परिवर्तन ने न केवल इस कला को जीवित रखा बल्कि इसे वैश्विक पहचान भी दिलाई। आज गोंड चित्र न केवल दीवारों और कैनवास पर, बल्कि पुस्तकों, कपड़ों, घरेलू सजावटी वस्तुओं और डिजिटल माध्यमों पर भी देखने को मिलते हैं। इस विस्तार ने गोंड चित्रकला की निरंतरता को नई दिशा दी है और इसके महत्व को और बढ़ा दिया है। गोंड कलाकार अब अपने चित्रों के माध्यम से आधुनिक समस्याओं जैसे पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण और सामाजिक असमानताओं को भी व्यक्त कर रहे हैं। इस प्रकार गोंड चित्रकला एक जीवंत संवाद का माध्यम बनी हुई है, जो समय और परिस्थिति के साथ स्वयं को ढाल लेती है।

गोंड चित्रों का महत्व केवल सांस्कृतिक या कलात्मक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत गहरा है। इस कला ने गोंड समुदाय के अनेक कलाकारों को रोजगार और आत्मनिर्भरता का साधन प्रदान किया। वैश्विक स्तर पर इस कला की लोकप्रियता ने आदिवासी समाज को एक नई पहचान और सम्मान



भी दिलाया। साथ ही, यह कला शिक्षा और जागरूकता का भी एक माध्यम बनी, जिसने बिना भाषा और शब्दों के संदेशों को पहुँचाने का कार्य किया। इस प्रकार गोंड चित्रों की निरंतरता और महत्व का सार यही है कि यह कला परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु का कार्य कर रही है। यह न केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखती है, बल्कि वर्तमान की समस्याओं और भविष्य की चुनौतियों को भी चित्रों के माध्यम से प्रकट करती है। गोंड चित्रकला की यही विशेषता है कि इसमें समय के साथ बदलने और प्रासंगिक बने रहने की क्षमता है, जो इसे अमर और निरंतर बनाती है।

गोंड चित्रकला की शैली, प्रतीक और तकनीक

गोंड चित्रकला कला परंपरा की एक अद्वितीय धरोहर है, जिसमें शैली, प्रतीक और तकनीक का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह चित्रकला केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह गोंड समाज की जीवनशैली, आस्था, लोकविश्वास और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध का दर्पण भी है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें प्रयुक्त प्रत्येक रेखा, रंग और आकृति का कोई न कोई प्रतीकात्मक अर्थ अवश्य होता है।

1. गोंड चित्रकला की शैली

गोंड चित्रकला की शैली अत्यंत विशिष्ट है, जिसे अन्य कलाओं से अलग पहचान मिलती है। इसमें प्राकृतिक आकृतियों जैसे पेड़-पौधे, पक्षी, जानवर, नदी, पहाड़, सूर्य-चंद्रमा आदि को प्रमुखता से चित्रित किया जाता है। आकृतियों को बनाने के लिए सूक्ष्म रेखाओं, बिंदुओं और ज्यामितीय आकारों का प्रयोग किया जाता है। चित्रों में समरूपता और लय दिखाई देती है, जिससे कला जीवंत और गतिशील प्रतीत होती है। गोंड चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें खाली स्थान नहीं छोड़ा जाता, बल्कि उसे बारीक रेखाओं और बिंदुओं से सजाया जाता है। यह शैली एक तरह से जीवन की निरंतरता और संतुलन का प्रतीक है।

2. गोंड चित्रों में प्रतीक

गोंड चित्रकला में प्रयुक्त प्रतीक गोंड समाज की आस्थाओं और मान्यताओं को प्रकट करते हैं।

- **वृक्ष (विशेषकर जीवन वृक्ष):** जीवन, समृद्धि और निरंतरता का प्रतीक।
- **मछली:** उर्वरता और समृद्धि का द्योतक।
- **पक्षी (जैसे मोर, चिड़िया):** स्वतंत्रता, प्रेम और खुशी का प्रतीक।
- **हिरण:** कोमलता, शांति और सौहार्द का द्योतक।
- **बाघ:** शक्ति, संरक्षण और सामर्थ्य का प्रतीक।



- **सूर्य और चंद्रमा:** समय और जीवन चक्र की निरंतरता का द्योतक।
- **बिंदु और रेखाएँ:** ऊर्जा, गति और लय का प्रतीक।

इन प्रतीकों के माध्यम से गोंड कलाकार न केवल प्रकृति की सुंदरता दिखाते हैं, बल्कि जीवन के गहरे संदेश भी संप्रेषित करते हैं।

3. गोंड चित्रकला की तकनीक

गोंड चित्रकला की तकनीक भी इसकी विशिष्टता का प्रमुख आधार है। पारंपरिक रूप से यह चित्र मिट्टी, दीवारों और घरों की झोपड़ियों पर बनाए जाते थे। कलाकार प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे, जैसे पीला रंग हल्दी से, हरा पत्तियों से, लाल मिट्टी से और काला रंग कोयले या मैंगनीज से तैयार किया जाता था। समय के साथ तकनीक में बदलाव आया और कलाकारों ने कैनवास, कागज और एक्रिलिक रंगों का प्रयोग करना शुरू किया। चित्र बनाने की तकनीक में सबसे पहले मुख्य आकृति बनाई जाती है और फिर उसे रेखाओं, बिंदुओं और ज्यामितीय पैटर्न से भरा जाता है। बारीकियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे चित्र जीवंत और गतिशील दिखाई देते हैं। यह तकनीक केवल सजावट के लिए नहीं है, बल्कि यह चित्रों को अर्थपूर्ण और प्रतीकात्मक भी बनाती है।

दृश्य संचार के रूप में गोंड चित्रों की भूमिका

गोंड चित्रकला भारत की कलाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो न केवल सौंदर्य का अनुभव कराती है बल्कि गहरे अर्थों में एक प्रभावी दृश्य संचार का माध्यम भी है। दृश्य संचार का तात्पर्य केवल आंखों से देखने वाली आकृतियों या रंगों से नहीं है, बल्कि उनके पीछे छिपे संदेशों, प्रतीकों और भावनाओं से है। गोंड चित्र इसी दृष्टि से आदिवासी जीवन, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक परंपराओं और प्रकृति से उनके गहरे संबंध का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। गोंड समुदाय में जहां लिखित भाषा और लिपि का प्रयोग सीमित रहा, वहां चित्रों ने संवाद का कार्य किया। यह चित्रकला मौखिक परंपराओं के साथ जुड़कर कहानियों, दंतकथाओं और अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित करती रही। यही कारण है कि गोंड चित्रकला को केवल कला न मानकर एक जीवंत दृश्य संचार प्रणाली कहा जा सकता है।

गोंड चित्रों की सबसे बड़ी भूमिका यह रही कि उन्होंने समाज को एक साझा सांस्कृतिक पहचान दी। विवाह, जन्मोत्सव, त्योहार, पूजा या फसल कटाई जैसे अवसरों पर बनाए गए चित्र न केवल घरों को सजाने का साधन थे, बल्कि वे यह संदेश भी देते थे कि समाज की एकता, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और देवताओं में आस्था उनके जीवन के मूल आधार हैं। जब गोंड कलाकार दीवारों पर 'जीवन वृक्ष' बनाते थे तो वह केवल एक पेड़ की आकृति नहीं होती



थी, बल्कि जीवन की निरंतरता और पीढ़ियों के बीच के संबंध का प्रतीक होती थी। इसी तरह, हिरण, बाघ, मछली या पक्षियों की आकृतियाँ उनके जीवन अनुभवों और विश्वासों का संचार करती थीं। इस प्रकार गोंड चित्र बिना किसी भाषा के समाज को शिक्षा और संदेश देने का कार्य करते थे।

दृश्य संचार के रूप में गोंड चित्रों की भूमिका केवल धार्मिक और सामाजिक संदेशों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने प्रकृति के संरक्षण और संतुलन का भी बोध कराया। गोंड कलाकार प्रकृति के हर तत्व को पवित्र मानते थे और उसे चित्रों में दर्शाकर यह संदेश देते थे कि मनुष्य का जीवन पर्यावरण पर निर्भर है। उदाहरण के लिए, नदियों की आकृति जल के महत्व को रेखांकित करती थी, मछलियाँ समृद्धि और जीवन का प्रतीक थीं, जबकि पक्षियों की आकृति स्वतंत्रता और आनंद का संदेश देती थी। इस प्रकार चित्र एक माध्यम बनकर समाज को यह सिखाते थे कि प्रकृति की उपेक्षा मानव जीवन के लिए विनाशकारी हो सकती है।

आधुनिक समय में गोंड चित्रकला ने दृश्य संचार की भूमिका और भी व्यापक बना ली है। अब यह कला केवल दीवारों या घरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि कैनवास, किताबों, वस्त्रों और डिजिटल माध्यमों पर भी अभिव्यक्त हो रही है। इससे यह कला वैश्विक स्तर पर संवाद का माध्यम बनी। गोंड चित्र आज पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण और सामाजिक असमानताओं जैसे आधुनिक मुद्दों पर भी प्रकाश डाल रहे हैं। जब एक गोंड कलाकार कैनवास पर बाघ और पेड़ों की आकृति बनाता है तो वह केवल सुंदरता नहीं रच रहा होता, बल्कि यह संदेश भी दे रहा होता है कि वन्यजीवों और जंगलों का संरक्षण मानवता के भविष्य के लिए अनिवार्य है। इस प्रकार गोंड चित्रकला दृश्य संचार की ऐसी भाषा बन चुकी है, जिसे हर वर्ग और हर संस्कृति का व्यक्ति समझ सकता है।

आधुनिक समय में गोंड चित्रकला और दृश्य संचार का विस्तार

आधुनिक समय में गोंड चित्रकला ने अपने पारंपरिक स्वरूप को बनाए रखते हुए दृश्य संचार के क्षेत्र में नए आयाम प्राप्त किए हैं। पहले यह कला केवल गोंड समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं तक सीमित थी, जहाँ इसे घरों की दीवारों, आँगनों और पूजा-अनुष्ठानों में सजाने के लिए प्रयोग किया जाता था। किंतु आज यह कला स्थानीय सीमाओं को पार कर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी पहचान बना चुकी है। गोंड कलाकारों ने इस कला को आधुनिक माध्यमों के अनुरूप ढालते हुए इसे कैनवास, कागज, वस्त्र, घरेलू सजावटी वस्तुओं और यहाँ तक कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी प्रस्तुत करना शुरू किया है। इससे गोंड चित्रकला अब केवल सजावटी वस्तु नहीं रही, बल्कि संदेश देने और संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी साधन बन गई है।



आधुनिक समय में गोंड चित्रकला ने दृश्य संचार के रूप में सामाजिक और वैश्विक मुद्दों पर प्रकाश डालने का कार्य किया है। गोंड कलाकार अपने चित्रों में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण, प्रदूषण और जैव विविधता जैसे विषयों को शामिल कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, जब गोंड चित्रों में बाघ और जंगल की आकृतियाँ दिखाई जाती हैं तो वे केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं होतीं, बल्कि यह संदेश देती हैं कि वन्य जीवन और प्रकृति का संरक्षण मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार, नदियों, मछलियों और वृक्षों की आकृतियाँ जल-संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन का संदेश देती हैं। इस तरह गोंड चित्रकला अब केवल अतीत का दर्पण नहीं, बल्कि वर्तमान की समस्याओं और भविष्य की चुनौतियों पर भी संवाद स्थापित कर रही है।

गोंड चित्रकला का विस्तार दृश्य संचार की दृष्टि से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अब यह शिक्षा और जागरूकता का माध्यम बन चुकी है। किताबों और बच्चों की कहानियों में गोंड चित्रों का प्रयोग करके पर्यावरणीय और सामाजिक मूल्यों को सिखाया जा रहा है। इसी प्रकार, संग्रहालयों और प्रदर्शनी में जब गोंड चित्रकला प्रदर्शित होती है तो वह वैश्विक दर्शकों को आदिवासी समाज की परंपराओं, विश्वासों और जीवन दर्शन से अवगत कराती है। यहाँ दृश्य संचार की शक्ति यह है कि चित्रों की प्रतीकात्मक भाषा किसी भी भाषा की बाधाओं को पार कर सीधे दर्शकों के मन तक पहुँचती है।

इसके साथ ही, आधुनिक समय में गोंड चित्रकला का विस्तार आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण से भी जुड़ा है। गोंड कलाकार अब अपने चित्रों को बेचकर आजीविका कमा रहे हैं और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रहे हैं। इससे आदिवासी समाज की पहचान मजबूत हुई है और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक स्तर पर सम्मान भी मिला है। डिजिटल माध्यमों ने गोंड कला को और व्यापक बना दिया है, जहाँ सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से यह कला दूर-दराज के दर्शकों तक पहुँच रही है।

शैक्षिक और जागरूकता के क्षेत्र में गोंड चित्रों की उपयोगिता

गोंड चित्रकला केवल एक आदिवासी कला परंपरा ही नहीं है, बल्कि यह शिक्षा और जागरूकता का भी सशक्त माध्यम है। आदिकाल से ही गोंड समाज ने चित्रों को अभिव्यक्ति और संवाद का साधन बनाया। जहाँ लिखित भाषा और पठन-पाठन का अभाव था, वहाँ गोंड चित्रों ने कहानियों, मान्यताओं और अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुँचाने का कार्य किया। यही कारण है कि यह चित्रकला शिक्षा और जागरूकता दोनों के क्षेत्र में प्रभावी रही है और आज भी इसकी उपयोगिता बनी हुई है।



1. अनौपचारिक शिक्षा का साधन

गोंड चित्रकला बच्चों को सहज और रोचक तरीके से जीवन मूल्यों और सामाजिक परंपराओं का ज्ञान कराती थी। घर की दीवारों या आँगन में बने चित्र बच्चों को पेड़-पौधों, जानवरों और पक्षियों की महत्ता समझाते थे। “जीवन वृक्ष” का चित्र उन्हें यह संदेश देता था कि जीवन निरंतरता और संतुलन पर आधारित है। इसी तरह, मछली, पक्षी और बाघ जैसे प्रतीकों से बच्चे प्रकृति, साहस, स्वतंत्रता और सहयोग का महत्व समझते थे। बिना लिखित भाषा के यह चित्र अनौपचारिक शिक्षा का ऐसा साधन थे जो सभी के लिए सुलभ और सरल था।

2. पर्यावरणीय जागरूकता का माध्यम

गोंड समाज का जीवन प्रकृति से गहराई से जुड़ा था और उनके चित्र भी यही संदेश देते थे। नदियों, पहाड़ों, पशु-पक्षियों और जंगलों की आकृतियाँ यह सिखाती थीं कि मानव का अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है। आधुनिक समय में भी गोंड कलाकार इन चित्रों के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के महत्व के प्रति जागरूक कर रहे हैं। जब गोंड चित्र प्रदर्शनी में प्रदर्शित होते हैं, तो वे दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि यदि प्रकृति का संरक्षण नहीं किया गया, तो मानवता का भविष्य संकट में पड़ जाएगा।

3. सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक पहचान

गोंड चित्रों ने समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखा। विवाह, त्योहार या अनुष्ठानों पर बनाए गए चित्र केवल सजावट नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक शिक्षा का कार्य भी करते थे। वे लोगों को सहयोग, सामूहिकता और सांस्कृतिक एकता का संदेश देते थे। आधुनिक समय में यह चित्र आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।

4. आधुनिक शिक्षा में प्रयोग

आज गोंड चित्रों का प्रयोग शैक्षिक सामग्री में भी होने लगा है। कई बाल साहित्य और पाठ्यपुस्तकों में गोंड चित्रों का उपयोग किया जाता है, जिससे बच्चों को पढ़ाई रोचक लगती है और वे विषयवस्तु को आसानी से समझ पाते हैं। संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में प्रदर्शित गोंड चित्र बच्चों और युवाओं को आदिवासी संस्कृति से अवगत कराते हैं और उनमें विविधता के प्रति सम्मान की भावना विकसित करते हैं।



5. वैश्विक जागरूकता का साधन

गोंड चित्र अब केवल स्थानीय नहीं रहे, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी पहचान बना चुके हैं। कलाकार अपने चित्रों के माध्यम से आधुनिक समस्याओं जैसे जल संकट, प्रदूषण, असमानता और सामाजिक न्याय पर ध्यान आकर्षित करते हैं। प्रतीकों की सार्वभौमिक भाषा दर्शकों को किसी भी सांस्कृतिक या भाषाई बाधा के बिना संदेश समझने में सक्षम बनाती है। इस प्रकार गोंड चित्रकला वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाने का प्रभावी माध्यम बन चुकी है।

वैश्विक स्तर पर गोंड चित्रकला का प्रसार और दृश्य संचार की शक्ति

गोंड चित्रकला आज अपने विशिष्ट रंग, रेखाओं और प्रतीकों की वजह से वैश्विक पहचान बना चुकी है। यह कला केवल दीवारों और आँगनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब यह कैनवास, कपड़े, कागज़, डिज़ाइन उत्पादों और अंतरराष्ट्रीय कला दीर्घाओं तक पहुँच चुकी है। गोंड चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें दृश्य संचार की अपार शक्ति निहित है, क्योंकि यह चित्र जटिल भावनाओं, सांस्कृतिक धारणाओं और जीवन मूल्यों को बिना किसी शब्द के सरल और सशक्त ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि भाषाई और भौगोलिक सीमाएँ पार करके यह कला विश्वभर के लोगों को आकर्षित करती है।

वैश्विक स्तर पर गोंड कला के प्रसार का सबसे बड़ा कारण इसकी प्रतीकात्मक भाषा है। जब कोई दर्शक "जीवन वृक्ष," मछली, पक्षी या बाघ का चित्र देखता है, तो उसे केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि प्रकृति और जीवन के बीच गहरे संबंध का संदेश भी मिलता है। इस प्रकार, गोंड चित्र वैश्विक दर्शकों को पर्यावरणीय संतुलन, सहयोग, सहअस्तित्व और आध्यात्मिकता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों से जोड़ते हैं। दृश्य संचार की यही शक्ति गोंड कला को लोकल से ग्लोबल स्तर तक पहुँचाने में सहायक बनी है।

आज कई गोंड कलाकार अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग ले रहे हैं, उनकी पेंटिंग्स यूरोप, अमेरिका और एशिया की प्रसिद्ध कला दीर्घाओं में प्रदर्शित हो रही हैं। न केवल यह, बल्कि आधुनिक डिज़ाइन और डिजिटल माध्यमों में भी गोंड चित्रों का प्रयोग होने लगा है, जिससे यह कला विश्व के बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँच रही है। डिज़ाइन कंपनियाँ, फैशन इंडस्ट्री और प्रकाशन संस्थाएँ गोंड चित्रों का उपयोग उत्पादों और पुस्तकों में कर रही हैं। इस प्रकार गोंड चित्र न केवल कला के रूप में बल्कि संस्कृति-संचार और ब्रांडिंग के साधन के रूप में भी पहचान बना रहे हैं।



गोंड चित्रों की दृश्य संचार शक्ति का एक और पहलू यह है कि ये चित्र वैश्विक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करते हैं। कई कलाकार पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन, असमानता और शांति जैसे विषयों को गोंड शैली में चित्रित कर रहे हैं। उनकी कला अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती है और उन्हें गंभीर मुद्दों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह इस बात का प्रमाण है कि गोंड चित्रकला केवल पारंपरिक कला न होकर समकालीन समय की चुनौतियों को व्यक्त करने का एक सक्रिय माध्यम भी है।

निष्कर्ष

गोंड चित्रकला दृश्य संचार का एक सशक्त और जीवंत माध्यम है जिसने समय के साथ निरंतर विकास किया है। यह कला परंपरा से आधुनिकता तक का सफर तय करते हुए न केवल गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखे हुए है बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रकृति, पर्यावरण और जीवन के प्रति मानवीय जिम्मेदारियों का संदेश भी दे रही है। दृश्य संचार के इस रूप ने यह सिद्ध कर दिया है कि चित्रकला केवल सौंदर्यबोध की वस्तु नहीं होती, बल्कि यह समाज का दर्पण और संदेशवाहक भी होती है। गोंड चित्रों के माध्यम से जो संवाद स्थापित होता है वह न केवल रंगों और आकृतियों में सीमित है बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन के गहरे संदेशों को भी संप्रेषित करता है। इस प्रकार गोंड चित्रकला का विकास दृश्य संचार की शक्ति और प्रभाव का अद्वितीय उदाहरण है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालखंडों को जोड़ने का कार्य करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रानी, अर्चना और प्रमुख। (2019)। प्रमुख कलाकारों की गोंड चित्रकला (जंगरह सिंह श्याम, राम सिंह उर्वेती का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन)। जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड ट्रेड। 14(2):41-47।
2. भारद्वाज, कुमकुम और उकांडे, अनु। (2014)। गोंड जनजातीय कला में रंग: मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला में रंगों की व्याख्या और आलोचनात्मक मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय। 2(3):1-5।
3. बोरा, शोभा और साक्षी (2016)। "गोंड चित्रकला में हालिया रुझान", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड होम साइंस, वॉल्यूम 3 (7-8), जुलाई और अगस्त।
4. गोस्वामी, पी. मनाश (2018)। "गोंड चित्रकला: समकालीन परिदृश्य का अध्ययन", इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन रिव्यू एएमयू।



INTERNATIONAL CONFERENCE ON RESEARCHES IN ENGINEERING, SCIENCE,
TECHNOLOGY, MANAGEMENT AND HUMANITIES (ICRESTMH – 2024)

25TH AUGUST, 2024

5. बोरा, शोभा और साक्षी (2016)। "गोंड चित्रकला में हालिया रुझान", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड होम साइंस, वॉल्यूम 3 (7-8), जुलाई और अगस्त।
6. गोस्वामी, पी. मनाश (2018)। "गोंड चित्रकला: समकालीन परिदृश्य का अध्ययन", इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन रिव्यू एएमयू।
7. मिश्रा, कमल के. (2013)। "जनजाति और जनजातीयता पर", वी. के. श्रीवास्तव (संपादक), भारत में जनजातियाँ: संकल्पनाएँ, संस्थाएँ और प्रथाएँ, न्यू दिल्ली: सीरियल्स पब्लिकेशन्स।
8. राव, अंकिता सिंह (2018)। "गोंड चित्रकला: भारतीय धरोहर के सार का प्रकट करना", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड होम साइंस।
9. खरवार, दीपक। (2024)। गोंड जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक जीवन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के विशेष संदर्भ में)। पूर्व देव सामाजिक विज्ञान जर्नल, 30 | 49-64।
10. माझी, हुतेसान और महापात्र, आर.. (2023)। ओडिशा के नुआपाड़ा जिले के गोंड समुदाय की कला, शिल्प और नृत्य पर अध्ययन। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स। 4(1), 708-725।
11. मलिक, गरिमा और सेठी, सबीना। (2023)। शैक्षिक और विधिक श्रंखला: गोंड चित्रकला की चित्रात्मक लोककथाएँ: एक प्राचीन संस्कृति का प्रतीकवाद। दर्शनशास्त्र। 15(1):131-136।